हिंदी भवन संदेश

(हिंदी प्रचारिणी सभा का सूचना-पत्र)
लोंग माउंटेन – मॉरीशस

NEWSLETTER

Website : hindipracharinisabha.com --- E.Mail: hindipracharinisabha@hotmail.com

वर्ष 8 | अंक 20 | अगस्त 2016 | संपादक / टंकन / सज्जा : यंतुदेव बुधु | भाषा गई तो संस्कृति गई

सम्पादकीय

संप्रेषण कौशल का ज्ञान होना ज़रूरी है !

भाषा के चार कौशलों में वाचन को महत्वपूर्ण समझा जाता है क्योंकि वाचन के द्वारा ही हम दूसरों तक अपने विचारों को प्रेषित कर पाते हैं। प्रायः यह देखा जाता है कि छात्र कई डिग्रियाँ तो कमा लेते हैं पर उस भाषा में स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त कर पाना उनके लिए कठिन होता है। वे धारा-प्रवाह से किसी भी भाषा में बात नहीं कर पाते हैं। इसका एक ही कारण होता है और वह है –मौखिक अभिव्यक्ति की कमी होना !

हिंदी प्रचारिणी सभा "हिंदी बोलो अभियान" पिछले कई दशकों से चलाती आ रही है। भाषा पर तभी छात्र अधिकार पा सकते हैं जब उस भाषा में बात करेंगे। आज नौ वर्षीय शिक्षा योजना के अन्तर्गत हम संप्रेषण कौशल की बात सुन रहे हैं। पाठ्य पुस्तकों में संप्रेषण कौशल विषय पर अभ्यास कार्य होना आवश्यक है। यह बहुत ही अच्छी बात है, अच्छा विचार है कि शिक्षा मंत्रालय नौ वर्षीय शिक्षा योजना में संप्रेषण कौशल को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे छात्रों में बोलने की क्षमता पैदा होगी तथा छात्र भाषा पर अधिकार पा सकेंगे।

स्कूलों में आज देखा जाता है कि छात्र हिंदी की कक्षा में क्रिओल भाषा में शिक्षकों से बात करते हैं। ऐसा ही चलता रहा तो छात्रों को अपनी भाषा पर पूरा अधिकार कभी नहीं होगा। इसलिए शिक्षण में मौखिक अभिव्यक्ति का होना एकदम महत्वपूर्ण समझा जाता है। अब तो ऐसा लगता है कि परीक्षा के अंतर्गत मौखिक-परीक्षा पर भी ध्यान दिया जाए तो इसका सही नतीजा निकल पाएगा। कुछ वर्ष हुए हिंदी प्रचारिणी सभा ने यह कार्य परिचय परीक्षा से शुरू किया था। कुछ वर्षों तक मौखिक परीक्षा चली फिर इसे रोक दी गई। इस बारे में हमें फिर से विचार करना होगा।

प्रायः यह देखा जाता है कि हमारे देश के कई हिंदू सांसद किसी हिंदी कार्यक्रम में भाषण देते हुए कहते हैं कि अगर मुझे हिंदी आती तो आज मैं हिंदी में बोलता ! हम नहीं चाहते कि आज की नई पीढ़ी के साथ ऐसी स्थिति पैदा हो। इसलिए आप हिंदी भाषा में वार्तालाप कीजिए, उसपर आपका पूरा अधिकार होगा। ♦

यंतुदेव बुधु
प्रधान-हिंदी प्रचारिणी सभा

कविता-वाचन प्रतियोगिता 2016

हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा आयोजित कविता-वाचन प्रतियोगिता का अंतिम चरण दिनांक 11.06.16 को एस. एम. भगत सभागार में सम्पन्न हुआ। इस प्रतियोगिता के लिए 89 प्रतियोगियों ने आवेदन भेजा था। अंतिम चरण के लिए 18 प्रतियोगियों को चुना गया ; जिनमें 10 को पुरस्कृत करना था।

विजेता – मीरा पारिक

सभा के प्रधान यंतुदेव बुधु जी ने लोगों का स्वागत करते हुए सभा द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं और अन्य गतिविधियों से अवगत कराया। छात्र-जगत में इस प्रतियोगिता के प्रति बढ़ती रुचि के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। छात्रों को तैयार करने में सहयोग के लिए शिक्षकों के प्रति विशेष आभार प्रकट किया गया।

मंत्री धनराज शम्भु जी ने निर्णायक मण्डल के सदस्यों का परिचय देने के बाद बारी-बारी से प्रतियोगियों को अपनी-अपनी कविता प्रस्तुत करने के लिए मंच पर आमंत्रित किया। इस वर्ष हमने दो विशेष बातें नोट कीं। पहले तो प्रतियोगी निर्भयतापूर्वक अपनी कविता सुनाने के लिए अत्यन्त उत्साहित थे। आत्मविश्वास उनकी आँखों में झलक रहा था।

दूसरी बात यह थी कि प्रतियोगियों का कविता-चयन उत्तम रहा। कविता सुनाने का ढंग तथा स्वर भी सराहनीय रहा। सभागार में उपस्थित लोगों ने कविताओं का खूब रसास्वादन किया। डेढ़ घंटे में कविता वाचन प्रतियोगिता सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई।

निर्णायक मण्डल के सदस्यों ने काफी विचार-विमर्श के पश्चात विजेताओं के नाम इस प्रकार घोषित किए :

1. मीरा पारिक	शिवोपासक सभा
2. उत्तम तुरी	म. गाँधी एस. एस मोका
3. जय आयुश सुकन	हिंदी नव ज्योति संघ
4. उर्मिला देवी कल्लू	सि. विरासामी एस.एस.एस
5. हेशना जानकी परसाद	हिंदू गर्ल्स कॉलिज
6. खुशबू नावजी	म. गाँधी एस.एस. फ्लाक
7. गुणशाली मधु	शिक्षित हिंदी पाठशाला
8. खुशिक कुमार मोती	हिंदी भवन, लोंग माउंटेन
9. कितन कुमार महाराय	मे फ्लावर कॉलिज
10. नाशीता लच्छन	सरस्वती पाठशाला, काच्ये मिलितेर

विवरण – *"टहल रामदीन"*

हिंदी प्रचारिणी सभा का स्थापना दिवस

हिंदी प्रचारिणी सभा की स्थापना 12 जून 1926 में 'धारा नगरी' (अब लोंग माउंटेन) में हुई थी। यह शुभ कार्य इलाके की कन्याओं के शिक्षण के लिए भारतीय सेनानी श्री बालगंगाधर तिलक की प्रेरणा से 'तिलक विद्यालय' नाम से श्री नेमनारायण गुप्त जी द्वारा हुआ था। 'तिलक विद्यालय' 1935 में एक राष्ट्रीय नाम (हिंदी प्रचारिणी सभा) से पंजीकृत हुआ।

सभा के मुख्य दाता श्री रामदास रामलखन की प्रतिमा को माल्यार्पण कर रही छात्रा

इस वर्ष हिंदी प्रचारिणी सभा का 90 वीं वर्षगाँठ मनाने के शुभावसर पर शनिवार 18 जून को दो कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। प्रथम हिंदी भवन विद्यालय के छात्रों के निमित साहित्यिक गोष्ठी रही जो मॉरीशस के वरिष्ठ साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर कार्यक्रम शुरू होने से पहले सभा के मुख्य दाता श्री रामदास रामलखन जी की स्मृति में उनकी प्रतिमा को छात्रों द्वारा एक पुष्पमाला अर्पित की गई। इसके पश्चात छात्रों ने अपनी-अपनी तैयारियाँ प्रस्तुत कीं। अवसर के मुख्य वक्ता श्री धनपाल हीरामन जी रहे। छात्रों को सुनने के बाद हीरामन जी का व्याख्यान हुआ। उन्होंने श्री रामदेव धुरंधर जी से संबंधित काफ़ी बातें बताईं। उनके वक्तव्य से छात्र लाभांवित हुए और उन्होंने अपनी संतुष्टि व्यक्त की।

अपह्नान में एक बजे दूसरे कार्यक्रम का श्रीगणेश हुआ जो एक कवि-सम्मेलन रहा। कवि-सम्मेलन में विशेष रूप से डॉ. विनोद कुमार मिश्र 'विश्व हिंदी सचिवालय' के महासचिव की अध्यक्षता रही। डॉ. नूतन पांडे भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव के विशेष आतिथ्य तथा अनेक हिंदी प्रेमियों के बीच 'साहित्य संवाद' के साथ कवि-सम्मेलन शुरू हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सभा के मंत्री श्री धनराज शम्भु ने हिंदी प्रेमियों का स्वागत किया। तत्पश्चात सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु ने उपस्थित महानुभावों का स्वागत किया और सभा के उद्देश्यों एवं गतिविधियों पर प्रकाश डाला। मंच संचालन करने की ज़िम्मेदारी विश्व हिंदी सचिवालय के पूर्व कार्यवाहक सचिव श्री गुलशन सुखलाल जी को सौंपा गया। बड़ी खूबी तथा कर्मठता के साथ गुलशन जी ने कवि-सम्मेलन का संचालन किया। कवियों में सर्वश्री राज हीरामन, धनराज शम्भु, विष्णुदत्त मधु, परमेश्वर बिहारी, इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ, डॉ. सरिता बुधु, विनय दसोई, पं. कलका, झमन, सूर्यदेव सिबोरथ, लक्ष्मी जयपोल, अंजु घरभरन, सीता रामयाद, मेधाविनी रसिक, डॉ. नूतन पांडे ने अपनी-अपनी कविताएँ सुनाईं। उपस्थित श्रोताओं ने रसपूर्ण कविताओं का खूब रसास्वादन किया।

काव्यपाठ के पश्चात विश्व सचिवालय के महासचिव डॉ. विनोद कुमार मिश्र जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण से सभी रसिक जनों का मन मोह लिया। उन्होंने कहा - "मैं हिंदी प्रचारिणी सभा जैसे तीर्थ स्थान में गोता न लगाता तो हिंदी की यात्रा से वंचित रह जाता।" सभा के कार्यों के प्रति आभार प्रकट करते हुए उन्होंने भविष्य की शुभकामनाएँ दीं तथा अपनी संतुष्टि अभिव्यक्त की।

अंत में सभा के प्रधान ने हिंदी के इस उत्सव में भाग लेने हेतु सभागार में उपस्थित सभी हिंदी प्रेमियों के प्रति आभार प्रकट किया। ♦ विवरण - *"धनराज शम्भु"*

कविता सुनाते हुए कवि राज हीरामन

कवि-सम्मेलन के अवसर पर सभागार में उपस्थित हिंदी-प्रेमी।

डॉ. विनोद कुमार मिश्र का स्वागत करते हुए सभा के प्रधान

इतिहास के पन्नों से .....

श्री जयनारायण रॉय

हिंदी प्रचारिणी सभा के इतिहास में तथा मॉरीशस के हिंदी जगत में श्री जयनरायण रॉय जी का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाना चाहिए। हिंदी प्रचारिणी सभा में जयनारायण रॉय जी का बड़ा ही योग-दान रहा है। रॉय जी को हिंदी भाषा एवं साहित्य-सेवा से गहरा लगाव था।

श्री जयनारायण रॉय का जन्म 8 सितम्बर 1908 में बो शाँ गाँव में हुआ था। उनकी प्राथमिक शिक्षा ग्राँन्ड रिवर साउथ ईस में हुई थी। फिर उनकी माध्यमिक शिक्षा पोर्ट लुई के स्कूल में पूरी हुई तथा उच्च शिक्षा के लिए वे इलाहबाद-भारत चले गए।

1937 में श्री जयनारायण रॉय इलाहबाद विश्वविद्यालय से एम. ए. एल. एल. बी. की उपाधि प्राप्त कर मॉरीशस लौटने के तुरन्त बाद वे हिंदी प्रचारिणी सभा के सदस्य बने। 1952 में वे सभा के प्रधान पद सम्भालने लगे। वे 1952 से 1977 तक व 25 वर्षों तक सभा के प्रधान पद पर रहे। वे काफ़ी दूरदर्शी थे। इस दौरान उन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए बहुत सराहनीय कार्य किए। इलाहबाद के 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' से संपर्क करके उन्होंने परिचय से उत्तमा तक की परीक्षाओं का आयोजन करवाया। ये परीक्षाएँ आज तक सफ़लतापूर्वक आयोजित की जाती हैं। इन परीक्षाओं का मॉरीशस सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है और उत्तमा-साहित्य रत्न को डिप्लोमा का दर्जा प्राप्त है। उनके कार्यकाल के दौरान ही सभा द्वारा हिंदी सप्ताह तथा हिंदी सम्मेलन का आयोजन हुआ था।

वे अंग्रेज़ी के साथ हिंदी के भी विद्वान थे। उन्होंने दोनों भाषाओं में सृजन कार्य किया है। 1942 में उनकी लिखी हुई एकांकी 'जीवन संगिनी' आज भी बड़े चाव से पढ़ी जाती है। 1970 में उनकी लिखी पुस्तक 'मॉरीशस में हिंदी साहित्य का इतिहास' परिचय कक्षा के लिए पाठ्य पुस्तक के रूप में छात्र अध्ययन करते थे। उन्होंने अनेक कहानियाँ एवं कविताएँ भी लिखी हैं। वे समाचार पत्रों में भी लिखते थे। उनके 600 से अधिक लेख प्रकाशित हुए हैं।

जयनारायण रॉय जी कई बार मॉरीशस की कई संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत तथा सम्मानित हुए हैं। शिक्षाविद के साथ-साथ वे एक इतिहासज्ञ, संसद के सदस्य, राजनीतिज्ञ, साहित्यकार, पत्रकार, समाज सेवक तथा श्रम संघवादी भी थे।

इस तरह सभा के माध्यम से उन्होंने मॉरीशस भर में हिंदी भाषा का प्रचार किया। हिंदी प्रचारिणी सभा सदा उनके प्रति आभारी रहेगी। ♦

उत्तमा (साहित्य रत्न) कार्यशाला 2016

वर्ष 2016 के दिसम्बर महीने में उत्तमा (साहित्य रत्न) परीक्षा में भाग लेने वाले छात्रों के निमित तारीख 5 अगस्त को सभा द्वारा एक एकदिवसीय कार्यशाला सुरुज प्रसाद मंगर भगत सभागार में आयोजित हुआ। इसमें लगभग 70 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। कार्यशाला आयोजन का उद्देश्य उत्तमा के छात्रों का मार्गदर्शन करना था जो कार्यकारिणी समिति के सदस्यों द्वारा सम्पन्न हुआ। इसलिए पाठ्यक्रम,प्रश्नपत्र तथा परीक्षा पर ही कार्यशाला आधारित रही।

सभा-मंत्री धनराज शम्भु जी ने पाठ्यक्रम तथा प्रश्नपत्रों पर बात की तथा विस्तारपूर्वक और बारीकी से प्रश्नों के उत्तर देने के विषय में जानकारी दी। उनके पश्चात सभा के कोषध्यक्ष श्री टहल रामदीन ने विस्तृत रूप से निबन्ध-लेखन पर प्रकाश डाला। उन्होंने निबन्ध के प्रकार, निबन्ध के भाग आदि पर विस्तृत रूप से छात्रों का ध्यान आकृष्ट किया। उनके बाद सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु ने हिंदी प्रौद्योगिकी पर बात की। उन्होंने यह बताया कि आज के युग में कंप्यूटर और इंटरनेट हिंदी भाषा के सीखने और सिखाने के लिए प्रयोग करें। अंत में सभा के सदस्य श्री तारकेश्वरनाथ ग्रिधारी ने संस्कृत भाषा पर अपना विचार दिया तथा हिंदी भाषा के विकास पर छात्रों को जानकारी दी। ♦

सभा द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं के नतीजे

1. राष्ट्रीय हिंदी निबन्ध प्रतियोगिता 2016

श्रेणी	नाम	पुरस्कार
प्रथम स्थान	– श्री शामलेश कुमार लिलिया	4000 रुपये
द्वितीय स्थान	– कुमारी भावना झौरी	3000 रुपये
तृतीय स्थान	– श्री चेतन ठाकुराचन्द	2000 रुपये

2. राष्ट्रीय स्तर पर – श्रुतिलेख प्रतियोगिता 2016

श्रेणी	नाम	पुरस्कार
प्रथम स्थान	– कुमारी उश्मिता माधव	1500 रुपये
द्वितीय स्थान	– कुमारी दीपेशा चेनिगाडू	1000 रुपये
तृतीय स्थान	– कुमारी दिव्या पोरावती	500 रुपये

➢ **विजेताओं को दिसंबर 2016 में समावर्तन समारोह के अवसर पर पुरस्कृत किए जाएँगे।**

हिंदी दिवस 2016

हिंदी प्रचारिणी सभा ने तुलसी जयंती के उपलक्ष्य पर शनिवार ता. 13 अगस्त को डॉ. विनय गुदारी जी की अध्यक्षता में हिंदी दिवस मनाया। तुलसी जयंती पर हिंदी दिवस मनाना संस्था के लिए तथा पूरे मॉरीशस के लिए इस रूप में महत्वपूर्ण है क्योंकि इस देश में हिंदी का पदार्पण मूलतः रामचरितमानस के माध्यम से ही हुआ है। हिंदी प्रचारिणी सभा लगातार सेवा-भाव से कई दशकों से हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी अद्वितीय भूमिका निभाती आ रही है। इस अवसर पर साहित्य सम्मेलन, इलाहबाद से परिचय से उत्तमा तक की परीक्षाओं में प्रथम दस में स्थान प्राप्त छात्रों को पुरस्कृत किया जाता है। साथ ही इस बार राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित कविता-वाचन प्रतियोगिता के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया।

सभा के अध्यक्ष श्री यंतुदेव बुधु ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए सभा के इतिहास पर प्रकाश डाला तथा सभा की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। इस समारोह में मुख्य अतिथि मंत्री माननीय श्री नंदकुमार बोधा ने सभा के कार्यों की सराहना करते हुए बताया कि हम सभी को अपनी जड़ें सींचनी चाहिए, उन्हें संवारनी चाहिए क्योंकि उनके साथ हमारा अस्तित्व जुड़ा हुआ है। विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव डॉ. श्री विनोद कुमार मिश्र ने हिंदी के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए। आर्य सभा के महासचिव श्री सत्यदेव प्रीतम ने सभा के साथ अपने पचास वर्षीय संबंध को उपस्थित लोगों के साथ साझा किया।

हिंदी भवन विद्यालय के छात्रों द्वारा रामचरितमानस की चौपाइयों की गेय प्रस्तुति भी हुई। कविता-वाचन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर आने वाली छात्रा ने "झाँसी की रानी" कविता की मनभावक प्रस्तुति की। वर्ष 2015 की एच. एस. सी. की हिंदी परीक्षा में पूरे विश्व में प्रथम स्थान पर तथा 2015 की उत्तमा परीक्षा में भी प्रथम स्थान पर आनेवाला छात्र केशव पोराहू को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर भोजपुरी संगठन की अध्यक्षा डॉ.श्रीमती सरिता बुधु, महात्मा गांधी संस्थान के डॉ. हेमराज सुन्दर, डॉ.राजरानी गोबीन, डॉ.सन्ध्या नवोसा, डॉ.लक्ष्मी झमन, श्री गुलशन सुखलाल, सुश्री अंजलि चिंतामणि आदि महानुभावों ने अपनी उपस्थिति से परीक्षाओं एवं प्रतियोगिताओं में उत्तीर्ण छात्रों को प्रोत्साहित किया।

लम्बे अरसे से हिंदी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष पद तथा "पंकज" पत्रिका के संपादन करनेवाले कर्मठ हिंदी-सेवी दिवंगत श्री अजामिल माताबदल पर एक विशेषांक का लोकार्पण मंत्री नंदकुमार बोधा के कर-कमलों द्वारा हुआ। मंच का संचालन सभा-मंत्री श्री धनराज शम्भु द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री विनय गुदारी को अध्यक्षीय भाषण के लिए आमंत्रित किया गया जिसके अंतर्गत उन्होंने विशेष रूप से छात्रों को संबोधित करते हुए हिंदी और उनके संपूर्ण चारित्रिक विकास पर अपना व्क्तव्य केन्द्रित रखा। ♦

उत्तमा तृतीय खण्ड के छात्रों के लिए ज़रूरी सूचना !

जो छात्र वर्ष 2015 के उत्तमा तृतीय खण्ड परीक्षा में एक या दो प्रश्नपत्रों में अनुतीर्ण रहे हैं। सभा उन्हें सूचित करती है कि इस वर्ष से दोबारा पूरी परीक्षा न देकर उन्हें केवल उन्हीं प्रश्नपत्रों में परीक्षा देनी होगी जिनमें वे असफल हुए हैं।

यह नियम केवल उत्तमा III के लिए लागू है।

हिंदी दिवस-चित्रावली